विचित्र परिदृश्य : शत्रु अदृश्य

आज वैश्विक संकट का विचित्र परिदृश्य है, एक विलक्षण दृश्य है, एक अनोखा, अद्‌भुत, अभूतपूर्व एक युद्ध जैसी स्थिति आज पूरे विश्व के समक्ष उपस्थित है।, मानव सभ्यता के इतिहास में संकट का यह वैश्विक संस्करण शताब्दी बाद अपने रौद्र, विकराल और प्रचण्ड रूप में इस प्रकार अदृश्य रूप में आकस्मिक रूप से प्रकट हुआ है कि संपूर्ण मानव का अस्तित्व ही खतरे में आ गया है। तमाम वैज्ञानिक उपलब्धि, आधुनिक ज्ञान–विज्ञान अनुसंधान को धत्ता बताकर, बौना साबित कर एक अनजान एक अपरिचित नाम ने पूरी दुनिया में अपना आतंक का, दहशत का साम्राज्य खड़ा कर दिया है, जिसका कल तक कोई नाम भी नहीं जानता था, आज वही अपरिचित नाम बच्चे–बच्चे के जुबान पर है और वो नाम है– कोरोना या Covid-19.

मानव जाति के समक्ष विगत इतिहास में भी युद्ध, महामारी, बाढ़, सूखा, भूकम्प, रीटा–कैटरीना–सूनामी आदि अलग–अलग नामों से आए तूफान, प्राकृतिक प्रकोप अन्य रूपों में माध्यम से आते थे और चले जाते थे, अपना कुछ प्रभाव छोड़कर। किन्तु सम्पूर्ण जीवन, पूरी दुनिया एक साथ ठप्प हो जाए, जिन्दगी कैद हो जाए, अचानक से LOCKDOWN हो जाए और जिन्दगी के साथ रेल, बस, गाड़ी, ऑफिस, स्कूल–कॉलेज, मॉल, मल्टीप्लेक्स, सिनेमा, बाजार सब एक साथ बंद हो जाए, सड़कें विरान, गलियाँ सूनी हो जाए। वो भी सब कुछ एक साथ एक दम से अचानक, ऐसा खौफनाक मंजन न कभी देखा और न कभी सुना था।

एक संपूर्ण डर का वातावरण। विचित्र बात तो यह है कि जिसका डर, जिससे डर है, वो शत्रु दृश्य और प्रत्यक्ष न होकर एक अदृश्य, अगोचर, अप्रत्यक्ष

कार्य किया है। प्रकृति से श्रेष्ठ कोई शिक्षक नहीं है। आज आत्ममंथन, आत्मचिंतन के संकट काल में मनुष्य को मानवीय भाव से संपृक्त कर भौतिकता के प्रति सजग Distancing का भी मूलमंत्र दिया है। Social Distancing के साथ–साथ भौतिकवादी Distancing भी अनिवार्य है, जीवन को यदि संतुलन व सुन्दर बनाना है तो अन्यथ खामियाजा भुगतने के लिए मनुष्य तैयार रहे। मनुष्य की नई रूचि, नई अनुभूति भौतिकता से दूर और आध्यात्मिकता के करीब ला रही है, उसके अन्दर संतोष, तृप्ति का भाव पढ़ा रही है। अतिरिक्त इच्छाएँ अतिरिक्त संकट का वाहक होती है। कोरोना के संकट ने मनुष्य को पुनः संकट से सृजन करना सिखाया है। सोच के पुराने सांचे को तोड़ एक नया सांचा बनाया है, जिसमें नया मनुष्य ढल रहा है।

डॉ. अंजय कुमार
असिस्टेंट प्रोफेसर
हिन्दी विभग
जाकिर हुसैन कॉलेज, दिल्ली

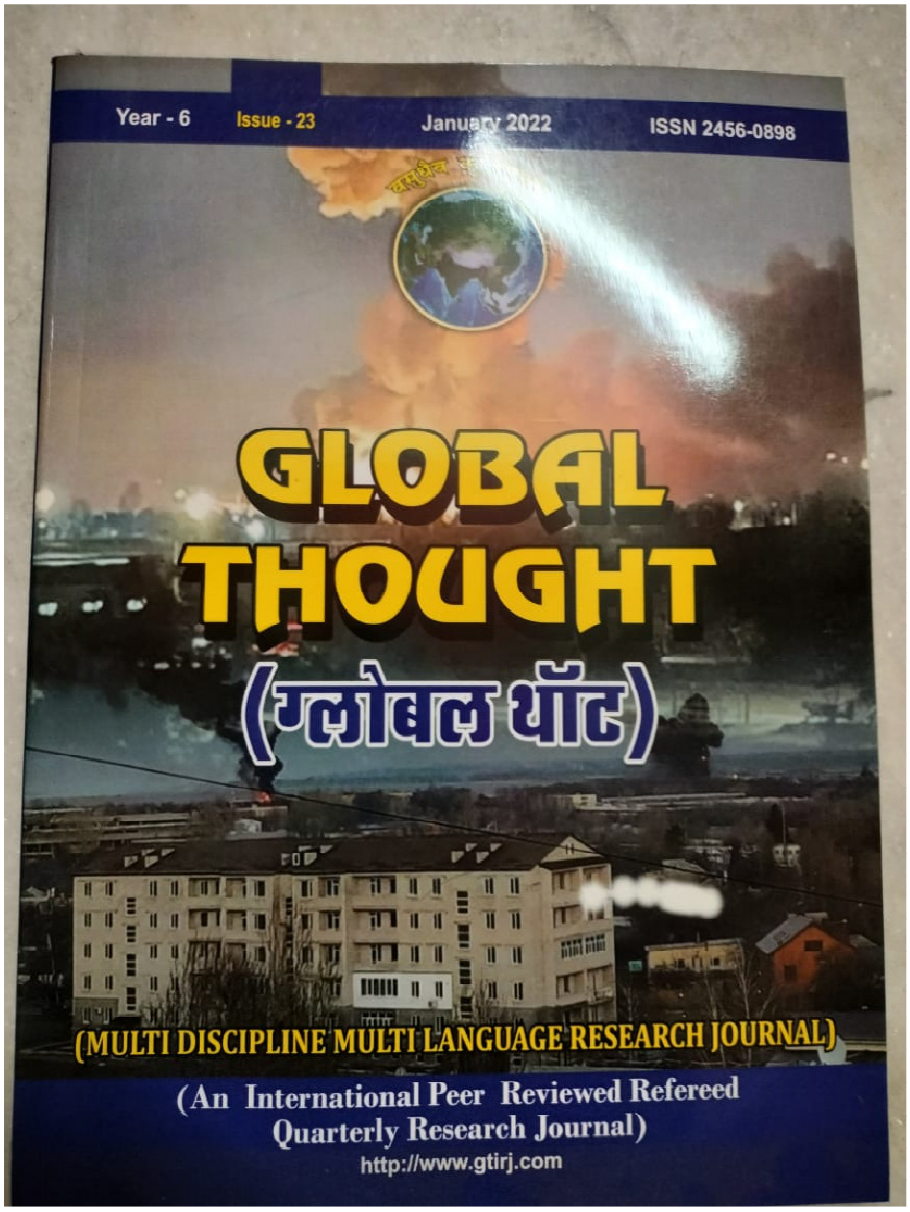
Year - 6
Issue - 23
January 2022
ISSN 2456-0898
GLOBAL
THOUGHT
(ग्लोबल थॉट)
(MULTI DISCIPLINE MULTI LANGUAGE RESEARCH JOURNAL)
(An International Peer Reviewed Refereed
Quarterly Research Journal)
http://www.gtirj.com

अनुक्रमणिका

Editorial viii

Rural Development in the Context of Cooperative Movement in India 1
Pankaj Kumar Soni

Buddhism in India and Society 9
Dr. Manisha Sharma

भाषा का वर्गीय चरित्र 14
विवेक विक्रम सिंह

संस्कृत व्याकरण में वाक्यस्वरूपविचार 19
डॉ. जितेन्द्र कुमार

Economic Dimension of Media in the Context of Employability: A study of Indian Scenario 23
Dr. Seema Maheshwari

सामाजिक न्याय की आस में वृंदावन की विधवाएँ 31
डॉ. पिंकी पुनिया/डॉ. मनोज कैन/डॉ. हीरा सिंह बिष्ट

पैर तले की जमीन : खंडित पात्रों की गाथा 38
डॉ. दीनदयाल

एक विश्वप्रसिद्ध स्त्री-कला का इतिहास : मिथिला की लोक-चित्रकला में तांत्रिक परम्परा का प्रतिबिम्बन (600 ई. -1600 ई.) 43
डॉ. मृत्युंजय कुमार

The apparatus of cognitive Mind: '*Being*' into '*Beness*' 47
Saurabh Kumar Suman

हिंदी साहित्य का भविष्य और सोशल मीडिया 52
डॉ. अंजन कुमार

Use of Drawing by Students for Writing Answers Is an Effective Method of Writing Ability 56
Paramjeet Kaur

Public expenditure on Family Welfare : 1980-2015 60
Dr. Jyotsna

Robert Mugabe's Land Distribution Policy and its Impact on Socio-Economic Development of Zimbabwe 66
A.S. Rawokmi Zimik

ELM-PD classifier: An Extreme Learning Machine based identification of Plant Leaf Disease 76
Rashmi Mishra

शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों की अपने विद्यालय के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन 80
डॉ संदीप कुमार मिश्रा

नार्थ ईस्ट जनपद के कालेजों में दिव्यांग छात्रों के लिए उपलब्ध सुगम्य अध्ययन सामग्री का तुलनात्मक अध्ययन 84
डॉ. ओम मिश्रा / डॉ संदीप कुमार मिश्रा

समकालीन हिन्दी कहानी और स्त्री-विमर्श 88
डॉ. श्रुति रंजना मिश्रा

बौद्ध धर्म-दर्शन की वर्तमान में प्रासंगिकता 92
विनय कुमार राय

भारतीय संस्कृति में हिन्दू एवं बौद्ध धर्म के विकास में तीर्थयात्रा का महत्व 95
डॉ. चन्द्रशेखर पासवान

नासिरा शर्मा के उपन्यास में पितृसत्तात्मक समाज और स्त्री प्रतिरोध के स्वर (विशेष संदर्भ शाल्मली) 103
डॉ. अवधेश कुमार

Status of Disabled in Middle Eastern Countries 108
Dr. Smriti Singh / Dr. Mithila Bagai / Srijfa Bagai

वैश्वीकरण एवं भारतीय संस्कृति पर उसके प्रभाव 116
रोहित कुमार

हिंदी साहित्य के स्वर्णयुग की स्त्री 121
डॉ. अर्चना गौड़

Corporate Social Responsibility of Banking Companies in India 123
Rajendra Kumar Meena

Economic Growth and Sustainable Development 128
Dr. Sumit Prasher

Comparison of the Conceptualization of Conscious Leaders from Eastern Scriptures with Modern Views : Focus on Dimensions of Conscious Leaders 131
Reetika Jain

Panchayati Raj Reforms Since Independence - A Study 141
Dr. Avneet Kaur

वाक्यपदीय के अनुसार सम्बन्ध के प्रकारों का अनुशीलन 149
युवराज भट्टाराई

Mark Twain and the Universal Issues of Racism and Apartheid 153
Pankaj Kumar

मल्लिनाथ-अभिनवगुप्तयोः व्याख्यानविमर्शः 157
स्वर्णदत्त अनंत बाहेरवाडे

Environmental Movements 161
Dr. Rakhee Chauhan / Dr. Meena Charanda

21वीं शती के हिंदी उपन्यासों में कथात्मक वैविध्य 170
विवेक कुमार त्रिपाठी

उर्वशी में व्यक्त स्त्रीवादी चिंतन 174
आराधना तिवारी

रस-निष्पत्ति : काव्यशास्त्रियों के आलोक में 178
उत्तम कुमार / प्रवीण ममगाई

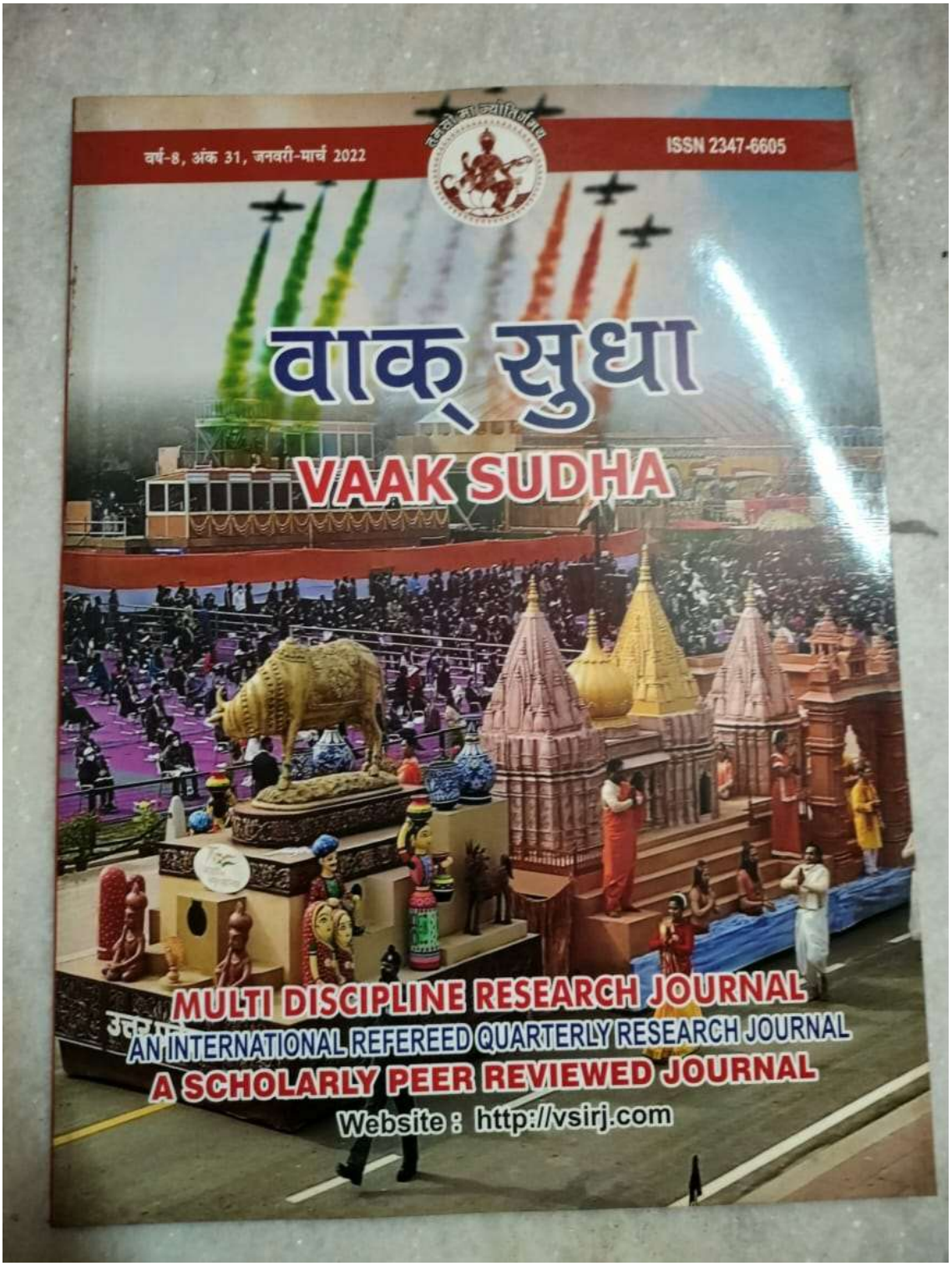
वर्ष-8, अंक 31, जनवरी-मार्च 2022
ISSN 2347-6605
वाक् सुधा
VAAK SUDHA
MULTI DISCIPLINE RESEARCH JOURNAL
AN INTERNATIONAL REFEREED QUARTERLY RESEARCH JOURNAL
A SCHOLARLY PEER REVIEWED JOURNAL
Website : http://vsirj.com

अनुक्रमणिका

सम्पादकीय viii

श्रीमद्भगवद्गीता में यज्ञ की अवधारणा 1
विभूति कुमार

संप्रेषण की अवधारणात्मक समझ 5
विवेक विक्रम सिंह

आधुनिक परिवेश में बदलते हुए संस्कार गीत 9
कुमारी अनीता

मुक्तिबोध के कथा साहित्य में चित्रित मध्यवर्गीय जीवन 15
सतवीर सिंह

उत्तरी भारत की संत परंपरा में आने वाले गुरु नानक देव के साहित्य की प्रासंगिकता 21
डॉ. सिम्मी चौहान

नारीवाद की गत्यात्मकता 26
डॉ. पिंकी पुनिया / डॉ. ऋतेष भारद्वाज

आधुनिक हिंदी कविता में बिंब का उद्भव एवं प्रसार 34
डॉ. अंजन कुमार

पत्ती रोग की बेहतर पहचान के लिए ResNet-50 के संयोजन में चुनी गई विशेषताओं का उपयोग : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन 38
रश्मि मिश्रा

महर्षि दयानन्द आधारित काव्यों में शान्त रस की अभिव्यक्ति 43
मधुलिका

राष्ट्र निर्माण में भाषा की महत्ता 47
डॉ. श्रुति रंजना मिश्रा

महाभाष्य-रत्नप्रकाश के आलोक में कर्मवद्भाव विमर्श 51
रोहित कुमार

मनीषा कुलश्रेष्ठ के साहित्य में स्त्री मुक्ति के सरोकार (शिगाफ के विशेष संदर्भ में) 55
डॉ. अवधेश कुमार

नार्थ कैम्पस के कॉलेजों तथा नार्थ ईस्ट जनपद दिल्ली के कॉलेजों में दिव्यांग छात्रों के लिए उपलब्ध सुगम्य वातावरण का अध्ययन 60
डॉ. ओम मिश्रा / डॉ संदीप कुमार मिश्रा

जलवायु परिवर्तन रोकने के लिए स्थानीय आन्दोलन 'झारखंड के विशेष संदर्भ में' 64
डॉ. कुमारी शुभा

मण्डलब्राह्मणोपनिषदि प्रतिपादितात्मतत्त्वस्वेतरदर्शनैः समीक्षणम् 67
सचिन द्विवेदी

फक्किकाप्रकाशरीत्या कृत्तद्धितसमासाश्च इति सूत्रविचारः 71
अनिलकुमारद्विवेदी

उर्वशी की सांस्कृतिक चेतना 76
डॉ. अर्चना गौड़

गाहड़वालों का इतिहास-लेखन एवं उसका विश्लेषणात्मक अध्ययन 79
आशिद खान

'लहरों के राजहंस' की प्रतीकात्मकता 82
उत्तम कुमार

21वीं शताब्दी में महिलाएं : अवसर के साथ नई चुनौतियाँ 86
भावना

हिन्दी रंगमंच और पृथ्वी थिएटर 90
डॉ. योगेश रस्तोगी

जम्मू-कश्मीर : साझा संस्कृति और विरासत 95
संगीता

सामाजिक सरोकारों के परिप्रेक्ष्य में सुलगता हुआ शहर की कविताएँ 99
अमन सिंह

आंवा : भारतीय नारीवादी युगबोध का दस्तावेज ... 104
कुमारी रंजना

सम्बन्धसमुद् देश में सम्बन्ध का स्वरूप विमर्श 10
युवराज भट्टाराई

मध्यवर्ग, यथार्थवाद और औपन्यासिक युगबोध 11
विवेक कुमार त्रिपाठी

रसस्वरूपम् 1
स्वर्णदत्त अनंत बाहेरवाडे

'अंधायुग' में आधुनिकताबोध और प्रयोगधर्मिता 1
आराधना तिवारी

National Journal of Hindi & Sanskrit Research

ISSN: 2454-9177
NJHSR 2022; 1(40): 98-100
© 2022 NJHSR
www.sanskritarticle.com

डॉ. अंजन कुमार
एसोसिएट प्रोफेसर,
ज़ाकिर हुसैन दिल्ली कॉलेज,
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

Correspondence:
डॉ. अंजन कुमार
एसोसिएट प्रोफेसर,
ज़ाकिर हुसैन दिल्ली कॉलेज,
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

समाज व्योम के दार्शनिक पिंड: कबीर

डॉ. अंजन कुमार

सारांश: ज्ञान-विज्ञान और दर्शन के क्षेत्र में पाश्चात्य अकादमिक जगत हमेशा से ही अपने ऊपर गर्व करता रहा है। औपनिवेशिक मानसिकता की आक्रांतता के चलते हमारा अकादमिक समाज भी उनका अनुकरण करने में पीछे नहीं रहा है। इस स्थिति ने न केवल हमारा गौरव कम किया है बल्कि हमें अँग्रेजी जगत का पिछलग्गू होने पर मजबूर कर दिया है। जबकि स्थिति इसके उलट है। हम ज्ञान, विज्ञान, कला, साहित्य, संस्कृति के अनेक क्षेत्रों में बहुत उन्नत और समृद्ध रहे हैं। नए नए अध्ययनों से यह धीरे-धीरे सामने भी आ रहा है। समाज-दर्शन भी एक ऐसा ही क्षेत्र है जिसमें हम अँग्रेजी साहित्य और दार्शनिकों से अपना पाथेय लेते रहे हैं। पर खोजने पर पता चलता है कि यह दर्शन बड़े प्राचीन रूप में हमारे यहाँ विद्यमान रहा है कबीरदास जिसके एक सशक्त हस्ताक्षर रहे हैं। एक अनुशासन के रूप में भले ही उनके यहाँ यह पहले-पहल दिखाई देता है पर व्यवहार में यह सदियों से भारतीय समाज का एक महत्त्वपूर्ण अंग रहा है। प्रस्तुत आलेख में यही दर्शाने का प्रयास किया गया है।

मूल शब्द: समाज-दर्शन, सामाजिकता, अस्तित्व, अंतस्साधना, एकात्म, सर्वात्मचेता बुद्धि, जन्मांतरवाद और कर्मफलवाद

सत्रहवीं शताब्दी के महान पाश्चात्य दार्शनिक फ्रांसिस बेकन का उद्धरण देते हुए उन्नीसवीं शताब्दी के महान समाज दार्शनिक जॉन स्टुअर्ट मैकेंजी जीवन, समाज और दर्शन के संबंध में एक महत्त्वपूर्ण बात कहते हैं। वह कहते हैं कि जीवन और दर्शन अथवा जीवन का दर्शन एक दूसरे में इतना घुला-मिला हुआ है कि दोनों का पृथकीकरण लगभग असंभव है। आगे वह लिखते हैं कि यह निर्णय करना अत्यंत कठिन है कि जीवन किसी दर्शन से अधिक निर्धारित होता है अथवा दर्शन जीवन से।

इन दोनों दार्शनिकों के विचारों ने पश्चिम के अकादमिक जगत में बड़ी धूम मचाई। समाज, जीवन और दर्शन को पहली बार एक साथ रखकर देखा गया। एक साथ रख कर देखे जाने का अर्थ यह है कि इसके पूर्व दर्शन उनके लिए एक स्वतंत्र वस्तु हुआ करता था। दर्शन की स्वतंत्र सत्ता और अस्तित्व हुआ करता था। इसलिए पहली बार इन सबको एक साथ रखकर देखे जाने पर उन्हें यह एक क्रांतिकारी परिवर्तन के समान लगा।

जब पाश्चात्य में यह विचार पल्लवित हो रहा था उससे सैकड़ों वर्ष पूर्व उत्तर भारत में एक ऐसा संत अवतरित हो चुका था जो अपढ़ होते हुए और मसि-कागद छुए बिना ही न केवल समाज को एक नई दिशा दे रहा था बल्कि एक ऐसी पृष्ठभूमि तैयार कर रहा था जिसमें जीवन, समाज और दर्शन एक ही तल पर संगुफित हो रहे थे। यही कारण है कि कबीर के दर्शन पर भी विचार करते हुए हम कभी किसी सैद्धांतिक दर्शन पर विचार नहीं करते बल्कि कबीर के जीवन और समाज पर ही विचार करते हैं।

कबीर का जीवन और समाज के प्रति उनकी दृष्टि स्वयं अपने आप में एक विशाल दर्शन है। यह अत्यंत महत्त्वपूर्ण है कि उन्होंने कोई सिद्धांत विशेष नहीं दिया बल्कि अपने जीवन को ही दर्शन के रूप में प्रस्तुत किया। तत्कालीन समाज जर्जर रूढ़ियों, मान्यताओं और बाह्याचारों से युक्त होकर स्वयं जर्जर हो चुका था। बाह्याडंबरों के सामने मन की अंतस्साधना शून्यप्राय हो चुकी थी।

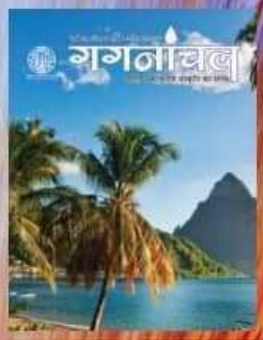

ISSN : 0971-1430

गगनांचल

साहित्य, कला एवं संस्कृति का संगम

वर्ष 45 अंक 2 मार्च - अप्रैल 2022

प्रकाशक

कुमार तुहिन

महानिदेशक

भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद

संपादक

डॉ. आशीष कंधवे

प्रकाशन सामग्री भेजने का पता

भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद

आजाद भवन, इंद्रप्रस्थ एस्टेट,

नई दिल्ली-110002

ई-मेल : pohindi.iccr@nic.in

गगनांचल अब इंटरनेट पर भी उपलब्ध http://www.iccr.gov.in/Publication/Gaganenchal पर क्लिक करें।

सदस्यता शुल्क

वार्षिक :		₹ 500
	यू.एस	$ 100
त्रैवार्षिक :		₹ 1200
	यू.एस.	$ 250

उपर्युक्त सदस्यता शुल्क का अग्रिम भुगतान 'भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद, नई दिल्ली' को देय बैंक ड्राफ्ट/मनीऑर्डर द्वारा किया जाना श्रेयस्कर है।

मुद्रण : स्पेस 4 बिजनेस सोल्यूशन्स प्रा. लि. दिल्ली

इस अंक के आकर्षण

हिंदी फिल्मों में मीरा

राम काव्य की लोक दृष्टि

विश्व फलक पर भारतीय संस्कृति

लिटरेचर और रिसर्च मैथडोलॉजी

भाषायी स्वाधीनता और हिंदी जागरण

महाभारत के मिथक और भारतीय साहित्य

मीडिया तकनीकी और हिंदी का वैश्विक फलक

युगांतर लोकप्रिय सुभद्रा कुमारी चौहान की कविताएं

गगनांचल में प्रकाशित लेखादि पर प्रकाशक का कॉपीराइट है किंतु पुनर्मुद्रण के लिए आग्रह प्राप्त होने पर अनुमति दी जा सकती है। अत: प्रकाशक की पूर्वानुमति के बिना कोई भी लेखादि पुनर्मुद्रित न किया जाए। गगनांचल में व्यक्त विचार संबद्ध लेखकों के होते हैं और आवश्यक रूप से परिषद की नीति को प्रकट नहीं करते। प्रकाशित चित्रों की मौलिकता आदि तथ्यों की जिम्मेदारी संबंधित प्रेषकों की है, परिषद की नहीं।

18:06 3.00 KB/S 4G 81

उपर्युक्त सदस्यता शुल्क का अग्रिम भुगतान 'भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद, नई दिल्ली' को देय बैंक ड्राफ्ट/मनीऑर्डर द्वारा किया जाना श्रेयस्कर है।

मुद्रण : स्पेस 4 बिजनेस सोल्यूशन्स प्रा. लि. दिल्ली

युगांतर लोकप्रिय सुभद्रा कुमारी चौहान की कविताएं

गगनांचल में प्रकाशित लेखादि पर प्रकाशक का कॉपीराइट है किंतु पुनर्मुद्रण के लिए आग्रह प्राप्त होने पर अनुमति दी जा सकती है। अतः प्रकाशक की पूर्वानुमति के बिना कोई भी लेखादि पुनर्मुद्रित न किया जाए। गगनांचल में व्यक्त विचार संबद्ध लेखकों के होते हैं और आवश्यक रूप से परिषद की नीति को प्रकट नहीं करते। प्रकाशित चित्रों की मौलिकता आदि तथ्यों की जिम्मेदारी संबंधित प्रेषकों की है, परिषद की नहीं।

अनुक्रम

गगनांचल

वर्ष 45, अंक 2, मार्च - अप्रैल 2022

प्रकाशकीय
3 कुमार तुहिन

संपादकीय
4 सामाजिक समरसता सुव्यवस्था की कुंजी
डॉ. आशीष कंधवे

संस्कृति-संवाद
7 विश्व फलक पर भारतीय संस्कृति
प्रो. खेमसिंह डहेरिया
12 राम काव्य कि लोक दृष्टि
मंजुला राणा
20 महाभारत के मिथक और भारतीय साहित्य
डॉ. रेखा उप्रेति

साहित्य-चिंतन
23 एक भास्वर स्त्री वॉक्: महादेवी वर्मा
इंदिरा दांगी

कथा-सागर
28 अंतिम संस्कार का खेल
तेजेन्द्र शर्मा (इंग्लैंड)
36 मैं सिर्फ बीज बेचता हूं
डॉ. रमेश यादव
41 एक था नेत एक थी आनू
डॉ. संगीता सक्सैना

लोक-संस्कृति
46 कश्मीरी लोक संस्कृति में स्त्री नीलमत पुराण, राजतरंगीणी, कथा सतीसर से कश्मीरनामा तक
कृष्णा अनुराग एवं गौरव रंजन

चिंतन-मंथन
50 भाषाई स्वाधीनता और हिंदी जागरण
सुर्य प्रकाश सेमवाल

सिनेमा-संसार
54 हिंदी फिल्मों में मीरा
नवलकिशोर शर्मा

शोध-संवाद
58 लिटरेचर और रिसर्च मैथडोलॉजी
डॉ. अंजन कुमार

शोध संसार
61 जयशंकर प्रसाद के नाटकों में ऐतिहासिक संवेदनशीलता और राष्ट्रीयता के प्रश्न
डॉ. अमित सिंह
65 युगांतर लोकप्रिय सुभद्रा कुमारी चौहान की कविताएं
अनीता उपाध्याय

संगीत-सरीता
68 जन वेदना को जन चेतना में ढालने वाले संगीतकारः भूपेन हजारिका
अमृता रानी

डायरीनामा
72 मेरे आर्मी जीवन की डायरी
अल्का पंत

मीडिया-चिंतन
78 इलेक्ट्रॉनिक मीडिया का नया दौरः वर्चुअल मीडिया एवं वर्चुअल रियालिटी
डॉ. आरती पाठक
81 मीडिया तकनीक और हिंदी का वैश्विक फलक
रीना प्रताप सिंह

लघकथा-कलश
84 शोभना श्याम
85 सुश्री कुंजिका राज

काव्य-मधुवन
86 रेखा गुप्ता
86 शीताभ शर्मा
87 रत्ना शर्मा
87 राजेन्द्र राजन
88 कल्पना गोयल
88 जयश्री शर्मा
89 नवलकिशोर दुबे
90 विनय कुमार अंकुश
91 शशी सक्सैना
92 **गतिविधियां : आई.सी.सी.आर.**

प्रकाशकीय

कुमार तुहिन

महानिदेशक

हिंदी एक ऐसी समृद्ध भाषिक, साहित्यिक और सांस्कृतिक चेतना की संवाहिनी है जो न केवल भारतीयता की भावना को मजबूत करती है, अपितु भारतवर्ष को एकसूत्र में भी बाँधती है। गगनांचल पत्रिका के माध्यम से भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद भी यही कार्य करती है। राष्ट्रीय-अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भारतीय

ISSN 2350-1065 MUKTANCHAL

शोध, समीक्षण, सृजन एवं संचार का

मुक्तांचल

पीयर रिव्यूड त्रैमासिक

वर्ष-9, अंक- 33, जनवरी-मार्च 2022

संपादक : डॉ. मीरा सिन्हा

प्रकाशक : हावड़ा विद्यार्थी मंच

प्रबंध संपादक : सुशील कुमार पांडेय

कला संपादक : शुभागता श्रीवास्तव

प्रूफ संशोधक : विनोद यादव

परामर्श एवं विशेष सहयोग :

प्रो. दामोदर मिश्र : अध्यक्ष, हिंदी विभाग, विद्यासागर विश्वविद्यालय

डॉ. कृष्ण कुमार : अध्यक्ष, गीतांजलि बहुभाषिक साहित्यिक समुदाय, (बर्मिंघम, यू.के.)

डॉ. पंकज साहा : खड़गपुर कॉलेज, पश्चिम बंगाल

डॉ. अरुण कुमार : प्राक्तन प्रोफेसर, राँची विश्वविद्यालय

डॉ. रणजीत सिन्हा : मिदनापुर कॉलेज (ऑटोनोमस), मिदनापुर

डॉ. निशांत : काजी नजरूल विश्वविद्यालय, आसनसोल

डॉ. रामप्रवेश रजक : हिंदी विभाग, कलकत्ता विश्वविद्यालय

व्यवस्थापन एवं प्रबंधन :

विनीता लाल, पार्वती शॉ, परमजीत पंडित, सरिता खोवाला एवं बलराम साव (9831889154)

संपर्क एवं प्रसार :

चाँदनी सिन्हा (बर्मिंघम, यू.के.) : +447411412229

कुणाल किशोर (के.वि. हिमाचल प्रदेश): 7998837003

लेखकों से अनुरोध किया जाता है कि मुक्तांचल में प्रकाशन हेतु सामग्री यूनिकोड वर्ड (Unicode Word) या (Kurtidev010) में भेजें।

पत्रिका में व्यक्त विचारों से संपादक की सहमति अनिवार्य नहीं 'मुक्तांचल' से संबंधित सारे विवादों के लिए न्याय-क्षेत्र कलकत्ता उच्च न्यायालय होगा।

पीयर रिव्यूड टीम :

डॉ. धूपनाथ प्रसाद : महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र

डॉ. विश्वजीत भद्र : प्राध्यापक, नेताजी नगर कॉलेज (कलकत्ता विश्वविद्यालय)

प्रो. मोहम्मद फ़रियाद : प्राक्तन अध्यक्ष, जनसंचार विभाग, मौलाना आजाद नेशनल उर्दू यूनिवर्सिटी, हैदराबाद

डॉ. सुनील कुमार 'सुमन': प्रभारी, क्षेत्रीय केंद्र कोलकाता, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र

प्रो. मंजु रानी सिंह : विश्वभारती, शांतिनिकेतन

प्रो. अरुण होता : अध्यक्ष, हिंदी विभाग, स्टेट यूनिवर्सिटी, बारासात

प्रो. मनीषा झा : अध्यक्ष, हिंदी विभाग, उत्तर-बंग विश्वविद्यालय

डॉ. सत्या उपाध्याय : प्रचार्य, कलकत्ता गर्ल्स कॉलेज, कोलकाता

डॉ. अंजनी कुमार झा : एसोसिएट प्रोफेसर, मीडिया स्टडीज, महात्मा गांधी केंद्रीय विश्वविद्यालय, मोतीहारी (बिहार)

डॉ. शुभ्रा उपाध्याय : अध्यक्ष, हिंदी विभाग, खुदीराम बोस सेंट्रल कॉलेज, कोलकाता

मुक्तांचल: A/c- 50200014076551, HDFC BANK BURRABAZAR, KOLKATA-700007, IFSC CODE- HDFC0000219

संपादकीय कार्यालय :

आधुनिक अपार्टमेंट, 6/2/1 आशुतोष मुखर्जी लेन सलकिया, हावड़ा-711106, पश्चिम बंगाल

संपर्क - 033-26751686, 9831497320, 9681105070

ई-मेल - muktanchalpatrika@gmail.com
sinhameera48@gmail.com

मुद्रक : शिक्षण, 50, सीताराम घोष स्ट्रीट, कोलकाता-700009

पत्रिका का मूल्य : एक अंक - 100 रुपये

सदस्यता शुल्क : वार्षिक-500 रुपये, आजीवन-2500 रुपये

संस्थाओं के लिए : वार्षिक-550 रुपये, आजीवन-3000रु.

डाकखर्च (प्रत्येक अंक के लिए) अतिरिक्त 30 रुपये।

Scanned with CamScanner

अवस्थिति

6 संस्तुति

आलेख :

7 श्रीनारायण पाण्डेय — भारतीय स्वाधीनता के 75 वर्ष

12 रामनिहाल गुंजन — डॉ. रेवतीरमण का समीक्षकीय विवेक

15 अरविंद कुमार — सत्यवती मालिक की कहानियाँ स्मृतियों के गहरे बुने तार

24 शुभा उपाध्याय — मजरूह सुल्तानपुरी के गीतों में वैविध्य का वैभवरू संदर्भ–हिंदुस्तानी फिल्म

संस्मृति :

28 प्रीति सिंह — लता मंगेश्कररू सुरों की अमित दास्तान ष्तुम मुझे यूँ भूला ना पाओगेष्

30 डॉ. गीता दूबे — मन्नू भंडारी होने का मतलब

35 डॉ. कृष्ण कुमार — रमा जोशी संस्मृति

विमर्श :

39 कुमार विश्वबंधु — शिक्षा में नई प्रौद्योगिकीरू नई चुनौतियाँ

शोधार्थी की कलम से :

44 रेणु चौधरी — अस्मिता का प्रश्न और स्त्री

47 परमजीत कुमार पंडित — जितेंद्र श्रीवास्तव की कविताओं में दलित एवं वंचित जीवन

55 पीयूष कुमार — राजेश जोशी की कविता में अलंकार–योजना

59 महात्मा पाण्डेय — हिंदी की दलित आत्मकथाओं के विशेष संदर्भ में

कविता :

64 पूनम सिंह — सप्तवेदी, बंजर तोड़ने की जिद्दी जिद, ओ मेरे क्लांत

66 उमेश पंकज — मेरे होने से, जो मुट्ठी में है, जो मुट्ठी में है–2

67 केशव शरण — आज हमारा प्यार, जनपद के एक कोने में, चकित दृग, बीच पुल के,

68 मनोज मिश्र — इंसान नहीं रहा इंसान, पशुत्व बनाम मनुष्यत्व

69 रेणुका अस्थाना — बावरा मन, समय, दोस्ती

70 जावेद खान — विद्रोह अंततः एक करुणा है, उम्मीद, दास का सर

कहानी :

71 रूपसिंह चंदेल — पुरस्कार

77 सुषमा मुनींद — ज्ञानपीठ

82 डॉ.रंजना जायसवाल — खोमचें भर मुहब्बत

86 महेश कुमार केशरी — अंतिम बार

समीक्षा :

89 योगेश तिवारी — ग्लोबल गाँव के दानव

96 मृत्युंजय पाण्डेय — स्त्री मन की तस्वीर

101 डॉ. सुलोचना दास — अथ कोरोना कथा : कोरोजीवी कविताएं

पुस्तकायन :

108 रानी सुमिता — आलोचना के सामानांतर

112 मुहम्मद जाकिर हुसैन — द रेड साड़ी : सोनिया गांधी की नाटकीय जीवनी

प्रवासी कलम :

117 पूनम सिन्हा — प्रवासी कवयित्री तिथि दानी से पूनम सिन्हा की बातचीत

साक्षात्कार :

120 डॉ. प्रकाश कु. अग्रवाल — साहित्य–संसार में चल रहे पाखंडों की पोल खोलना बहुत जरूरी है : डॉ. पंकज साहा

Scanned with CamScanner

समीक्षा

ग्लोबल गाँव के 'दानव'

योगेश तिवारी

मनुष्य ने मानवता के विकास के लिए समय-समय पर नाना प्रयत्न किए हैं। यह विकास बाहरी और भीतरी दोनों ही है। दुनिया के विद्वानों ने मानव की इस विकास-यात्रा को अलग-अलग समय में समझने-समझाने का प्रयत्न किया है। इस क्रम में कई विद्वानों का यह मानना है कि कुछ विकास किसी बड़े विध्वंस की नींव पर खड़े किये गये हैं। यानी, किसी एक का विकास किसी दूसरे की पीड़ा भी हो सकती है। मानव-विकास की इस विषम यात्रा में साहित्य का भी विस्तार होता चला गया है। हिंदी में भी साहित्य ने कई धाराओं का रूप ग्रहण किया है। इन्हीं धाराओं में से एक प्रमुख धारा है- आदिवासी साहित्य।

भारत जैसे 'विकासशील' देश में 'आर्थिक उदारीकरण' के आगमन ने इन देशों की पूरी संरचना ही बदल डाली। यह बदलाव एक दिन का नहीं था, वर्षों का था। पर इस बदलाव ने अब तक होते आए बदलावों की तुलना में बहुत कम समय लिया। इसलिए, एक तरफ जहाँ इसके फायदे हुए वहीं, दूसरी तरफ इसके नुकसान भी बहुत हुए। हाशिए के समाजों के हिस्से में अधिकतर नुकसान ही आया। उनसे उनकी अपनी स्वाभाविक पहचान छीन ली गयी या छीनने की कोशिश की गयी। इसलिए, हाशिए का कोई व्यक्ति हो या कोई देश, उसे अपने अस्तित्व की लड़ाई लड़नी पड़ी। सत्ताधारी-शक्तिशाली व्यक्तियों-देशों द्वारा अपने स्वार्थ के लिए हाशिए के व्यक्तियों-देशों की पहचान मिटाने की क्रूरता को दुनिया के विचारकों और साहित्यकारों ने अपने शब्दों में खूब जगह दी। इस अर्थ में अमेरिका के ख्यातिप्राप्त विद्वान नोम चोम्स्की और हिंदी के आदिवासी कथाकार रणेन्द्र एक ही पक्ष के पैरोकार माने जा सकते हैं।

रणेन्द्र का चर्चित उपन्यास 'ग्लोबल गाँव के देवता' झारखण्ड के असुर आदिवासियों को केन्द्र में रखकर लिखा गया हिन्दी उपन्यास है। कथाकार रणेन्द्र का यह उपन्यास सन् 2009 में प्रकाशित हुआ। आदिवासी विमर्श पर केन्द्रित इस उपन्यास ने साहित्य जगत में सबका ध्यान आकर्षित किया। इसमें लेखक ने जल, जंगल, जमीन से असुर जनजाति के सम्बन्ध को बारीकी से दिखाया है। नव उदारवाद और भूमण्डलीकरण के दौर में बहुराष्ट्रीय कम्पनियों, सत्ता और धर्म द्वारा अपने ही जल, जंगल, जमीन और परिवेश से विस्थापित होने को अभिशप्त आदिवासियों की दशा को इस उपन्यास में रेखांकित किया गया है। असुर जाति की जीवन-व्यववस्था का विवरण प्रस्तुत करता हुआ यह उपन्यास वस्तुतः आदिवासियों के 'हजारों वर्षों' से चल रहे संघर्ष की साहित्यिक रिपोर्टिंग है।

नब्बे के दशक में देश में आर्थिक उदारीकरण के लागू होने से पूँजी को एक नया रूप मिला। मध्यवर्गीय आम जनता को इससे सीधा लाभ पहुँचा। दुनिया की कोई भी कम्पनी किसी भी देश में अपने व्यापार-विस्तार के लिए सक्षम हो गई। मध्यवर्गीय पढ़े-लिखे लोगों के लिए रोजगार के नए अवसर उत्पन्न हुए। ये 'ग्लोबल' मजदूर किसी भी देश में जाकर काम कर सकते थे और कोई भी 'ग्लोबल' कम्पनी किसी भी स्थान के व्यक्ति को मजदूर बना सकती थी। इन्हीं बातों के मद्देनजर दुनिया को एक गाँव कहा जाने लगा। सूचना और तकनीकी क्रान्ति ने इस 'ग्लोबल गाँव' पद को पदार्थ रूप प्रदान किया। यही

Scanned with CamScanner

इस अंक में...

...शोध आलेख

संपादकीय....कुमार विश्वमंगल पाण्डेय....5

1.मनु शर्मा के उपन्यासों में पौराणिक पुरूष पात्रों का आधुनिक चरित्रांकन...गिरिराज भड़ाना...8

2.शिवानी और मन्नू भंडारी के कथा साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन...डॉ. मंजू शुक्ला...10

3.संयुक्त प्रान्त के गैनपुरी में क्रान्तिकारी आन्दोलन...डॉ. निधि रायजादा/डॉ. अनीता सिंह...14

4.बाबा बंदा सिन्ह बहादुर- एक अविस्मरणीय सेनानायक...डॉ. अनीता सिंह/ लता शर्मा...18

5.आधुनिक समय में स्वामी विवेकानंद के विचारों की प्रासंगिकता...डॉ निधि रायजादा...22

6.जयश्री रॉय की कहानियों में प्रेम : जिरह से विमर्श तक...प्रो. आलोक गुप्त/प्रिया...26

7.नासिरा शर्मा के उपन्यास 'ठीकरे की मंगनी में गुरिलग महिलाओं की स्थिति का अध्ययन'...ज्योति भड़ाना/डॉ. मंजू शुक्ला...32

8.गोविन्द मिश्र के कथा लेखन में नारी यथार्थ...विजय दीक्षित...38

9.संजीव...नेहा त्रिपाठी...42

10.भारतीय किसान पर एक दृष्टि...डॉ. कंचनपुरी/स्नेहलता ...47

11.राष्ट्र निर्माण में महात्मा गाँधी के वैचारिक सरोकार...नरेन्द्र जादम...50

12.ममता कालिया कृत उपन्यास 'कल्चर वल्चर' में निरूपित साहित्यिक सांस्कृतिक संस्थाओं में पनपता भ्रष्टाचार...दीनेश कुमारी...55

13.उदयप्रकाश की कहानियों में यथार्थबोध...डॉ. कल्पना बघेल...60

14.हिंदी नवजागरण विमर्श...अमित कुमार...67

15.'भिक्षुणी': नारी-स्वातंत्र्य की अभिव्यक्ति...रंजीत कुमार...71

16.दलित-विमर्श की दृष्टि से 'छतरी' में संकलित कहानियों का मूल्यांकन...नरेश राम...76

17.असगर वजाहत के उपन्यास में अभिव्यक्त मजदूरों की बदहाली...पुनीता कुमारी...81

18.अरूण प्रकाश की कथाओं में महिला सशक्तिकरण...कोमल कुमारी...85

19.हरिशंकर परसाई की साहित्य-दृष्टि और स्त्री...डॉ. ममता सिंह...88

20.कहानीकार नासिरा शर्मा...मो. साबिर...94

21. जयश्री रॉय की कहानियों में प्रेम: जिरह से विमर्श तक...प्रो. आलोक गुप्त/प्रिया...97

निबंध.....

1.समय....बद्रीनारायण चौधरी 'प्रेमघन'

2.सुआ पढ़वात गणिका तरि गई...अमृतलाल नागर

3.सीता-सावित्री के देश का दूसरा पहलू....अमृतलाल नागर

4.मौन....रघुवीर सहाय

5.अतिथि...रामविलास शर्मा

कहानी.....

1.एक थी गौरा...अमरकांत

2.हास्यरस...ज्ञानरंजन

Scanned with OKEN Scanner

बनास जन

फिर से पढ़ते हुए

Scanned with CamScanner

बनास जन
जुलाई, 2020

अव्यावसायिक
अंक 39, वर्ष 12

परामर्श : प्रो. नवलकिशोर
प्रो. काशीनाथ सिंह
डॉ. के. सी. शर्मा
डॉ. दुर्गाप्रसाद अग्रवाल
प्रो. माधव हाड़ा

संपादक : पल्लव

सहयोग : गणपत तेली, भँवरलाल मीणा

आवरण-चित्र : सुनील निमावत, उदयपुर

कला-पक्ष : मयंक शर्मा, उदयपुर

लेजरटाइप सेटिंग : सुभाष कश्यप, दिल्ली मो. : +91-9911163286

सहयोग राशि : 25 रुपए (यह अंक)-डाक द्वारा मंगवाने पर-50 रुपये
50 रुपये (संस्थागत)-डाक द्वारा मंगवाने पर-75 रुपये
300 रुपये-वार्षिक सहयोग (व्यक्तिगत)
600 रुपये-वार्षिक सहयोग (संस्थागत)
5000 रुपये-आजीवन (व्यक्तिगत)
8000 रुपये-आजीवन (संस्थागत)
The Draft/Cheque may please be made in favour of 'Banaas Jan'
OurA /C Details : SBI C/A No.61159024776
IFSC Code : SBIN0032036
Branch name : State Bank of India, D L DA V Model School, BN Block
Shalimar Bagh, New Delhi-110088

समस्त पत्र व्यवहार : पल्लव
393, डी.डी.ए., ब्लॉक सी एंड डी
कनिष्क अपार्टमेंट, शालीमार बाग, दिल्ली-110088
व्हाट्सअप : +91-8130072004 (केवल संदेश हेतु)
ई-मेल : banaasjan@gmail.com
वेबसाइट : www.notnul.com

नोट : प्रकाशित रचनाओं से संपादक की सहमति अनिवार्य नहीं।
संपादन एवं सह संपादन पूर्णतः अवैतनिक।
समस्त कानूनी विवादों का न्याय क्षेत्र दिल्ली न्यायालय होगा।

स्वामी-संपादक-प्रकाशक-मुद्रक पल्लव द्वारा 393, डी.डी.ए., ब्लॉक सी एण्ड डी, कनिष्क अपार्टमेंट, शालीमार बाग, दिल्ली-110088 से प्रकाशित और दिव्या आफसेट प्रिन्टर्स, बी-1422, न्यू अशोक नगर, मयूर विहार, दिल्ली-110096 से मुद्रित।

BA NAA S JA N
A Collection of Literature
Language : Hindi

ISSN 2231-6558

Scanned with CamScanner

अनुक्रम

अपनी बात		4
पद्मावत में परिवार, समाज और राजसत्ता	*प्रगति मिश्रा*	5
चंद्रगुप्त : स्वतंत्रता आंदोलन और नवजागरण से संवाद	*आशीष त्रिपाठी*	17
ध्रुवस्वामिनी : इतिहास का परिप्रेक्ष्य	*मानवेन्द्र प्रताप सिंह*	34
कामायनी की पढ़त की जरूरत	*बसंत त्रिपाठी*	41
व्योमकेश दरवेश का चारु चंद्रलेख	*योगेश तिवारी*	45
आधा गाँव और पसमांदा मुस्लिम समाज	*राहुल कुमार यादव*	58
जनतंत्र के तमाशे का आख्यान	*बिमलेंदु तीर्थंकर*	67
सलीका चाहिए आवारगी में	*वंदना चौबे*	73
एक नजर यह भी	*रेणु व्यास*	95
दलित आत्मकथा की शिखर उपलब्धि : जूठन	*नामदेव*	100
असहमति का विवेक और प्रतिरोध का साहस	*राम विनय शर्मा*	106
परंपरागत मंत्र के विरुद्ध एक मंत्र	*रचना सिंह*	114
काव्य-संरचना में अंतराल के होने के निहितार्थ	*संजय कुमार*	118
'तिरिछ' कहानी और गांधी का स्वप्न	*साहिल कैरो*	125

Scanned with CamScanner

बनास जन
अंक 31, जुलाई 2020
ISSN: 2231-6558

योगेश तिवारी

व्योमकेश दरवेश का चारु चंद्रलेख

आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी ने सन् 1963 में अपना चारु चंद्रलेख ग्रंथ के रूप में छपवाया। इससे पहले यह धारावाहिक रूप में कल्पना में छप चुका था। द्विवेदी जी ने अपने एक साक्षात्कार में बताया है कि 1950 से पहले इसका कुछ अंश पारिजात में भी छपा था।

सन् 1946 में आचार्य द्विवेदी बाणभट्ट की आत्मकथा का पुस्तकाकार रूप छपवा चुके थे। हिंदी जगत ने इसका जोरदार स्वागत किया था। साथ ही इस 'कथा' को 'उपन्यास' विधा के अंतर्गत रखते हुए श्रेष्ठ उपन्यास के पद पर आसीन भी किया था। इसका परिणाम यह हुआ कि चारु चंद्रलेख के प्रकाशन के बाद इसे भी उपन्यास माना गया। 'उपन्यास' की कसौटी पर इसे कसा जाने लगा। लोगों ने 'उपन्यास' का 'विलायती चश्मा' लगाया और चारु चंद्रलेख की गहरी छानबीन शुरू की। लोगों में अति-उत्साह था। खासकर युवा रचनाकारों में। जल्दी ही उनके इस उत्साह पर पानी फिर गया। छानबीन के दौरान चारु चंद्रलेख में उपन्यास जैसी कोई बात नहीं दिखी। न गठन के तौर पर और न ही कथानक के तौर पर। इसी सब के बीच सन् 1955 में कल्पना के ही जून अंक में चारु चंद्रलेख पर कवि कुँवर नारायण और कृष्णनाथ की समीक्षाएँ छपी। कल्पना के ही फरवरी 1966 के अंक में नेमिचंद्र जैन ने भी चारु चंद्रलेख की विस्तृत समीक्षा दृष्टिकेंद्र का स्खलन नाम से की।

अपने इस आलेख में नेमिचंद्र जैन ने चारु चंद्रलेख और द्विवेदी जी पर कई गंभीर आरोप लगाते हुए कहा कि कथा के बहाने एक अत्यंत 'रोचक युग' की 'बहुमुखी सांस्कृतिक गाथा' को पूरे विस्तार से कहने का "लोभ लेखक संवरण नहीं कर सका है।"[1] लेखक "उस युग के जीवन को, उसके विभिन्न स्तरों पर, विभिन्न रूपों और आयामों"[2] को विस्तार से जानने के कारण चुनाव नहीं कर पाता कि उसे क्या कहना है और क्या नहीं कहना है। वह सब कुछ कह देना चाहता है। "इस प्रक्रिया में चारु चंद्रलेख एक उपाख्यान के बजाय कथासरितसागर जैसा कहानी-किस्सों का खजाना बन गया है जिसमें एक में से दूसरा आख्यान तो निकलता चला जाता है, पर कुल मिलाकर रचना का कोई कलात्मक रूप नहीं उभरता।"[3] नेमिचंद्र जैन के अनुसार द्विवेदी जी अपने अतीत ज्ञान का प्रदर्शन करना चाहते थे और इस चक्कर में उन्होंने चारु चंद्रलेख के शिल्प से खिलवाड़ किया। उसकी उपेक्षा की। इस उपेक्षा के कारण ही "सातवाहन और चंद्रलेखा किसी आधुनिक उपन्यास के सार्थक पात्र नहीं, एक रोमांचक कथा के रोमैंटिक नायक-नायिका-मात्र बने रहते हैं।"[4] और तो और प्रतीकात्मक स्तर पर भी उपन्यास सफल नहीं है क्योंकि "ज्ञान (राजा), इच्छा (रानी) और क्रिया (मैना) का अंत तक कोई स्थायी, निर्विघ्न सामंजस्य नहीं हो पाता।"[5]

दूसरे शब्दों में इसी बात को यों कह सकते हैं कि "चारु चंद्रलेख में मानवीय तत्त्व की बड़ी क्षीणता है। उसमें उत्कट जीवनानुभूति का अभाव है, अपार तथ्य-समूह के ज्ञान का प्रदर्शन अधिक। वर्णन की रोचकता और रोमांचक रहस्यमयता पर इतना बल है कि मानवीय चरित्र या तो जीवंत नहीं, केवल नाम-भर हैं, या प्रतीक मात्र हैं, अथवा अपूर्ण और अविकसित रह गए हैं। वे अपने आप में, अथवा कुल-मिलाकर, कोई संयोजित समन्वित प्रभाव तो छोड़ते ही नहीं।"[6] यानी कि "कुल मिलाकर इस रचना

योगेश तिवारी : युवा आलोचक। एकाधिक पुस्तकें।
कोलकाता में निवास।
मो. : 91-9711263905 ईमेल : tyogeshh@gmail.com

Self Attested
योगेश तिवारी

Scanned with CamScanner